वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2022

- ★ अहं अनुराग का अनर्थ
- ★ भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में मेरी आँखों देखी घटनाएं
- ★ माँ का पल्लू
- ★ नया वर्ष
- ★ हमारे माता पिता
- ★ बच्चे का सकून घर की शान्ति से जुड़ा है।
- ★ देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2022 ई०)

माता के सम्बंध में

मेरी माता जन्म दाता, तुम्हीं से ज़िन्दगी मेरी,
तुम्हीं रक्षक सदा मेरी, तुम्हीं पुश्तो पनाह मेरी।
तेरी उल्फत भरा दिल गर न होता पासबां मेरा,
तो बेहोशी में जाने क्या हुई होती दशा मेरी।
कड़ाकेदार जाड़ों में, अगर मैं रात को उठता,
किसे बेदार करती थी, सिवा तेरे सदा मेरी।
अन्धेरी रात तूफां में, कलेजे से लगा लेती,
मुबादा खौफ़ दहशत से, हो जां नन्हीं हवा मेरी।
ज़बाने बेज़बानी में जो मैं कुछ बात करता था,
कोई समझे न मतलब तू समझती बात को मेरी।
हुआ बीमार मैं और रात दिन तड़पा किया तूने,
मुसीबत तुम पे होती थी, मुसीबत से सवा मेरी।
अजब तासीर हाथों में है, रंजो ग़म भुलाने की,
नज़र उल्फ़त भरी तेरी, है दुखों की दवा मेरी।
मेरे दुख के तेरे दिल में खटकने से यह साबित है
बना रखी है, अपने दिल में तूने इक जगह मेरी।
कोई साथी रफ़ीक़ ऐसा नहीं, जैसी कि तू माता,
वह साथी ऐश के और तू शरीक़े हर बला मेरी।
दिया उपकार का बदला तुझे उल्टा सताया है,
मुझे अब याद आती है, वफ़ा तेरी जफ़ा मेरी।
कभी शिकवा न इस पर भी, जुबां से तेरी सुन पाया,
तुझे देखा तो बस करते हुए सिफ़तो सना मेरी।
रफा गफ़लत में गो बरसों, 'अलम' दिल में समाया
मैं अब तुम्हारा बन जाऊं, रही है तू सदा मेरी।

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 2
फरवरी – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अहं अनुराग का अनर्थ

अहं अनुराग आत्मिक रोगों में सबसे अधिक सूक्ष्म, भयंकर और घातक रोग है। इस अनुराग के सम्बन्ध में जागृति या होश सर्वोत्तम बोधों में से एक है। अहं अनुराग के सम्बन्ध में जागृति या होश से शून्यता का दूसरा नाम अन्धकार है, हानि, दु:ख या विनाश है।

अहं अनुराग जनित पतनकारी कई भाव विनाशकारी भाव हैं। इनमें घमण्ड, "मैं" या अहंकार का नीच भाव सबसे भयानक है। भगवान की शिक्षा के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के अन्दर बचपन से ही यह पैदा हो जाता है।

घमण्ड अपने सम्बन्ध में घोर मिथ्या विश्वास होता है। अन्य कई मिथ्या विश्वास तो फिर भी सत्य की रोशनी में दिखाई दे जाते हैं। और बहुत से मनुष्य उनसे छुटकार पा लेते हैं, परन्तु अपने ही सम्बन्ध में मिथ्या विश्वास रखना सबसे भयानक बात है। इसलिए प्राय: हम सब छोटे बड़े मनुष्य आत्मा इस नीच भाव के सारी उम्र शिकार रहते हैं और अपनी इस अवस्था से भी प्राय: पूर्ण अज्ञानी रहते हैं।

घमण्ड अपनी "मैं" के प्यार को कहते हैं। हम अपने आपको बेहद प्यार करते हैं। अपने आपको सत्य के विरुद्ध वास्तविकता से सैकड़ों गुणा बढ़ चढ़ कर बड़ा योग्य, महान और ठीक देखते, जानते, मानते ओर विश्वास करते हैं। अपनी अकल, शकल, विद्या, बुद्धि, वाक् शक्ति, अपने विचार और राय और अपने विश्वासों आदि को हमेशा ठीक सुन्दर निर्दोष और अच्छे रूप में देखते और विश्वास करते हैं। अपने सम्बन्ध में ऐसे मिथ्या विश्वास को घमण्ड या अहंकार कहते हैं।

"मैं" का प्यार एक अजीब जोरदार नशा है। इस में हम अपनी कीमत हकीकत से बेहद ज्यादा और दूसरों की कीमत वास्तविकता से कम लगाते, देखते और विश्वास करते हैं।

एक शराब के नशे में चूर व्यक्ति ने महाराजा रणजीत सिंह को हाथी पर सवार देखकर चिल्ला कर भरे जलूस में खुल्लम खुला कह दिया था कि ऐ कट्टे वाले बता! कट्टे (भैंस के बच्चे) का क्या मूल्य लेना है? नशे

के असर से वह कंगाल होकर भी एक धनी व्यापारी बन बैठा और एक महाराजा को हीरे जवाहारात से सुसज्जित और हाथी पर सवार देखकर भी एक कट्टे वाला या भैंसे वाला देखने के लिए मजबूर हो गया था। जब अगले दिन नशा उतरने पर उसे महाराजा साहब के सामने पेश किया गया, तो उसने अपने और महाराजा साहब को वास्तविक हालत में देखा और कहा कि महराज! रात का जो व्यापारी था वह तो कभी का चला गया।

शराब के नशे से अहं का नशा असंख्य गुणा अधिक विषाक्त और भयानक होता है और यह कभी उतरता ही नहीं, किन्तु दिन प्रतिदिन कई सूरतों में बढ़ता चला जाता है और इस नशे के अधीन हम अपनी कीमत वास्तविकता से असंख्य गुणा अधिक लगा लेते हैं और दूसरों की कीमत वास्तविकता से बहुत कम लगाते हैं। हर मनुष्य आत्मा की यही कहानी है। इससे बाहर वह जा ही नहीं सकता।

घमण्ड के अधीन होकर अपने ऊपर अनर्थ का होना और अपनी बेहद हानि करना अनिवार्य है। गुरु महाराज ने घमण्डी मनुष्यों का ख्याल करके ही फरमाया है कि मनुष्य सब पागल हैं सिर्फ दर्जे का फर्क है। जो पागल खाने में दाखिल हैं, वह कुछ अधिक पागल हैं और जो पागल खाने में दाखिल नहीं हैं वह कुछ कम पागल हैं। घमण्ड के नशे में चूर प्रत्येक मनुष्य पागल है, अन्धा है, उल्टा दृष्टा है, और मिथ्याचारी है। परन्तु हम अपने घमण्ड के अधिकार के कारण अपनी ऐसी अवस्था को तनिक भी नहीं देख पाते। घमण्ड के कारण अनर्थ का होना एक लाज़मी और जरूरी बात है।

एक शराबी ने एक महाराजा को भैंसे वाला बता कर उन पर घोर अनर्थ किया। उनका घोर निरादर और अपमान किया। महाराजा की प्रकृत अवस्था को उल्टे रूप में देखा और उनसे लाभ उठाने की बजाए हानि उठाने के लिए लाचार हुआ। हम भी घमण्ड के नशे में चूर होकर प्राय अपने सम्पर्क में अपने वालों पर कदम कदम पर घोर अनर्थ करते हैं। उनके नेचर प्रदत्त अधिकार का अपहरण करते और उन पर जुलम करके उनको सताते तड़पाते हैं उनसे लाभ प्राप्त करने के स्थान में हानि करते और हानि उठाते हैं। अहं का नशा हमें अपनी और दूसरों की प्रकृत अवस्था का बोध नहीं होने देता।

एक एम०ए० तक पढ़े साहब ने अपना अनुभव गहरे दु:ख से बताया कि वह सेवा और हमदर्दी के भाव से एक शहरी बच्चे को जो नौंवी श्रेणी में पढ़ता था, पढ़ाने की सेवा किया करते थे। बच्चे के पिता भी ऐसा चाहते थे। जब पढ़ाने वाले उच्च शिक्षा प्राप्त जन उस बच्चे को पढ़ाते और किसी शब्द का अर्थ बताते, तो वह बच्चा अपने आपको बुद्धिमान, बड़ा होशियार देख और विश्वास करके अपने सेवाकारी और हमदर्द शिक्षक को एक साधारण जन ख्याल करके यह प्रश्न करता कि क्या प्रमाण है कि जिस शब्द के अर्थ आप बताते हैं, वह ठीक है और गलत नहीं। इस पर वह दयावान शिक्षक उस बच्चे को डिक्शनरी

दिखाते और उसे स्वयं वहां से उस शब्द के अर्थ पढ़वाते। तब जाकर उसे कुछ विश्वास होता कि इस शब्द के अर्थ ठीक ही होंगे। इस तरह एक ही वाक्य में कई शब्द बार बार डिकशनरी से उसे दिखा कर उसे विश्वाास पैदा कर पढ़ाना पड़ता। इस प्रकार जो काम दस पन्द्रह मिनट में हो सकता था, उसमें घन्टे लग जाते। वह बच्चा अपने आप को योग्य, बुद्धिमान और महान देखता था। और अपने शिक्षक को साधारण और घटिया देखता था। वह अपनी पढ़ाई के काम में भी बेहद हानि उठाता। और जो अपमान, अनर्थ और जुल्म वह अपने पढ़ाने वाले उपकारी और हमदर्द पर करता, उसका उसे तनिक भी बोध न था।

इसी प्रकार एक और लड़के के बारे में जो उनसे मुफ्त पढ़ता था उन्होंने बताया कि वह लड़का कहता था कि जिस तरह मैं चाहता हूं वैसे पढ़ाओ। इस पर उस शिक्षक ने उसे कहा कि देखो मैंने जो सेवा करनी है मैं तो जैसे तुम कहते हो, वैसे पढ़ाने को तैयार हूं परन्तु तुम्हारे पास फेल होने का मैं जिम्मा नहीं ले सकता। इस पर भी उस नौवीं दसवीं के बच्चे ने अपनी मर्जी से ही पढ़ना पसंद किया। और वह कभी भी पास न हो सका। इस बच्चे ने अपने आप को वास्तविकता के विरूद्ध अपने आपको ठीक और योग्य समझा और अपने मेहरबान योग्य और परोपकारी शिक्षक को साधारण और बुद्धू दर्शाया। उसने बहुत बड़ा अनर्थ उस परोपकारी पर किया। उस पर घोर निरादर और अपमान किया। उन को दुःख पहुँचाया और अपनी भी बहुत बड़ी हानि की। घमण्ड का भाव कैसा अनर्थकारी है। गुरू महाराज ने फरमाया है कि नेचर के विकास क्रम में नाना अस्तित्त्वों में जो सुन्दर, श्रेष्ठ और सराहनीय उच्च गुणों का विकास हुआ है, घमण्डी इन्सान उन गुणों की सुन्दरता और महिमा को नहीं देख सकता और श्रद्धा के सुन्दर भाव को जागृत और विकसित नहीं कर सकता। यह घमण्ड का भाव नेचर में जो विकासक्रम जारी है, मनुष्य को उनका बोधी और विश्वासी नहीं बनने देता।

एक एक शारीरिक रोगी घमण्ड के कारण बड़े से बड़े डाक्टर को खातिर में न लाकर और उस की बात की तनिक परवाह न करके महा हानि उठाता है। एक हाई कोर्ट के जज को टी.बी. हो गई। लाहौर के बड़े डाक्टर ने उसको सलाह दी कि आप शीघ्र पहाड़ पर चले जाएं, तो आप इस रोग से बच जाएंगे। परन्तु जज साहब ने अपने घमण्ड के कारण अपनी राय और अपनी समझ को महत्त्व दिया। और उस बड़े योग्य डाक्टर की राय को तुच्छ समझा। कुछ महीनों के बाद वह पहाड़ पर चले गए, परन्तु तब तक रोग बहुत बढ़ चुका था और वह बच न सके।

एक और अच्छे और योग्य जन के पांव के अंगूठे में एक जहरीला काँटा चुभ जाने से सैप्टिक हो गया था। एक अच्छे डाक्टर ने अगूँठा काट देने की सलाह दी, परन्तु डाक्टर की राय न मानी गई। सैप्टिक बढ़ता गया। फिर दिखाने पर डाक्टर ने पांव कटवाने की सलाह दी। परन्तु वह

जन डाक्टर की सलाह पर ध्यान न देते रहे। आखिरकार जब टाँग में जहर बहुत फैल गया तो डाक्टर ने कहा कि अब तो सारी टाँग कटवाओ या जिन्दगी से हाथ धोवो। अब वह जन टाँग कटवाने के लिए रजामन्द हुए और मुश्किल से उनकी जान बची। एक एक रोगी अपनी अहं प्रियता के कारण अपनी राय को डाक्टर की राय से बढ़िया समझ कर बहुत हानि उठा लेता है।

मेरे एक सहपाठी थे वह बहुत दुबले पतले थे। मैं सैर को जाया करता था मेरा शरीर सुन्दर सडौल और बलिष्ठ था। मेरे वह सहपाठी मुझे कहते कि मुझे अपने साथ सैर को ले चला करो। वह मेरे शारीरिक स्वास्थ्य पर स्पर्धा करते थे। मैं उन्हें सैर को ले जाता। वह बहुत प्रसन्न होते। परीक्षा निकट आ गई। मेरी तैयारी न थी। इसलिए मैं परीक्षा में न बैठा। मेरे वह सहपाठी परीक्षा में सारे पंजाब में फर्स्ट आए। मैं अभी विद्यार्थी था, वह एक कालिज में एम० ए० की कक्षा को पढ़ाने लग गए। उन्होंने मुझे लिखा कि मेरे पास आ जाओ, मैं तुम्हें पढ़ा दूंगा। थोड़े दिन बाद मुझे उनका पत्र मिला, जिस में लिखा था कि वह I.A.S. की परीक्षा में सारे भारत में छठे नम्बर पर आए हैं। उसके बाद वह असिस्टैण्ट कमिश्नर लग गए और उसके पश्चात् एक प्रदेश के होम सैक्रेटरी लगे। मैं उनसे पढ़ाई में लाभ उठा सकता था परन्तु मेरे घमण्ड ने मुझे उनकी योग्यताओं से लाभ उठाने से वंचित रखा। मैंने एक बहुत योग्य जन को दुबला, पतला, मामूली समझ कर उसे इतना तुच्छ समझा कि उससे कोई लाभ न उठा सका।

गुरू महाराज की अपार करूणा से उनकी रोशनी के एक एक बार मिलने पर मैंने देखा है, कि मैंने हमेशा दूसरों का अपमान करके, निरादर करके और उन्हें सता तड़पा कर अपना महा नाश किया है। मैंने अपनी अहं प्रियता से अन्धा होकर अपनी जन्म दाता रोम रोम उपकारी माता को उल्टे रूप में देखा है। अपनी तालीम के कारण अपने आप को बड़ा और उनका बहुत छोटा देखा और विश्वास किया है। और अपने बुरे व्यवहारों और बोलो से उन पर आघात लगाए हैं।

अपनी धर्मपत्नी को आयु, शिक्षा, बल, स्वास्थ्य आदि में अपने से तुच्छ और हीन देख कर, उनको सारी आयु दु:खी किया है सदा अपनी ही बात को ही महत्त्व दिया। इसी तरह अपने भाई को शिक्षा आदि के विचार से अपनी तुलना में तुच्छ देखा और उनके साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया। अपनी छोटी बहन को भी अपने व्यवहारों से दु:खी किया। मैंने अपने घमण्ड के विष से पागल होकर सबको डंक मारे। अपने सम्पर्क में आने वालों को लताड़ा और ज़ख्मी किया। अपने उपकारी, हितकारी धर्म सम्बन्धियों को भी अपने अहं के अनर्थ का शिकार बनाया और अपने से दुर्बल गरीब जनों पर भी जुल्म किए उनका अपमान किया। उनके ही दोष और अपराध देखता रहा। मुझे इस हकीकत का बोध न हुआ कि मेरा घमण्ड मुझ से क्या करा रहा है।

एक सभा में एक उच्च शिक्षा प्राप्त

सरकारी अधिकारी ने विवश खड़े हाकर पूजनीय भगवान की रोशनी मिलने पर ब्यान किया कि "मैं ईमानदार हूँ, रिश्वत नहीं लेता, अपनी इस खूबी से फूलकर मैं महा घमण्डी बन गया। अपने किसी बड़े से बड़े अधिकारी को मैं खातिर में नहीं लाता। मैं बड़े से बड़े अफसर के गले पड़ जाता हूँ। उनका अपमान कर जाता हूँ। उनको लताड़ता हूँ और उनकी परवाह नहीं करता। उफ़! मेरे घमण्ड ने न मुझे अच्छा बेटा बनने दिया, न अच्छा भाई न अच्छा पति। मैं अपने पिता से भी लड़ता झगड़ता और उनके साथ बुरा सलूक करता हूँ। पत्नी का कोई अधिकार नहीं देखता। न ही मैं अच्छा पिता हूँ। मेरे डर से बच्चों में कई प्रकार की हीनता पैदा हो गई है। "मैं ईमानदार हूँ" की रट ने मुझे पागल बना रखा हैं उफ! घमण्ड हमारी योग्यताओं को भी दूषित कर देता है। साधारणत: मोटे पापों में फंसे मनुष्य एक एक योग्य सेवक की महिमा को नहीं देख सकते जो मोटे पापों से बचा हुआ है। इसके विपरीत वह अपनी बड़ाई को सम्मुख रखकर और सेवक की किसी साधारण कमी की रट लगा कर उसे किसी खातिर में नहीं लाते और उससे लाभ उठाने के स्थान में हानि ही उठाते हैं।

एक एक सेवक अपनी अयोग्यता के कारण भगवान देवात्मा के कर्मचारी के गुण और रूप को देख नहीं सकता। सेवक देखता है कि जैसी उच्च शिक्षा मैं रखता हूँ और एक एक परीक्षा में मैंने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, पी. एच. डी. की है, विश्वविद्यालय के प्रोफैसर, विद्यार्थी मेरा सत्कार करते हैं, ऐसी कोई बात भगवान के कर्मचारी में न पाकर उसे अपने से घटिया तुच्छ और हेच देखता और विश्वास करता है। उसके गुणों के बजाए उसके अवगुण सामने लाता है। उसे बिल्कुल साधारण और तुच्छ विश्वास करता है। ऐसा ही दूसरों के पास जिकर करता है। उसके त्यागी और समर्पित जीवन से कोई लाभ नहीं उठाता, बल्कि उसे समाज के लिए हानि कारक समझता है। उस जन की समझ में यह नहीं आता कि उसका घमण्ड उसे किस लोक का वासी बना रहा है। एक एक सेवक को यह दिखाई नहीं देता कि भगवान देवात्मा के अमुक कर्मचारी ने बरसों से अपना घर का काम छोड़ा हुआ है। प्राय: अपना सारा समय वह अपनी समाज के काम में देता है, उसने भगवान के देव प्रभावों को पाकर कई पापी जनों को बदल कर समाज से जोड़ा है। प्रचार के काम में भूख, प्यास, सफर आदि के कष्ट उठाए हैं। सैंकड़ों हजारों रुपये दान माँग कर समाज में लाने का हेतु बना है। उसने समाज के नाना विभागों में कीमती सेवाएं की हैं। नए क्षेत्र बनाए हैं, साधन मन्दिर बनाए हैं। संस्थाएं बनाई हैं। देव प्रभाव दायक साधन किए हैं। एक या दूसरा उच्च भाव अपने अन्दर पैदा करने का संग्राम किया है। सैंकड़ों सभाएं कराकर अपना और दूसरों का कुछ न कुछ भला किया है। कई अच्छे लेख और गीत लिख कर अपना और औरों का भला किया है।

कई नए स्थानों पर पहुँच कर देव धर्म प्रचार के द्वारा समाज के गौरव को स्थापन किया है, जबकि अमुक सेवक ने ऐसा कुछ नहीं किया। तो भी वह सेवक अपने आपको उस कर्मचारी से बड़ा, बढ़िया और महान समझता है। विशेषकर यदि किसी सेवक की आयु किसी कर्मचारी से बड़ी हो तो वह कर्मचारी को बताने सिखाने, समझाने की अपने अन्दर आवश्यकता महसूस करता है। वह अपने आपको जीवन के विचार से बड़ा और कर्मचारी को छोटा, अपने आपको ऊँचा और महान और कर्मचारी को तुच्छ और हीन देखता है। इसलिए कर्मचारी से कुछ सुनने या सीखने के स्थान में स्वयं उसको सिखाने के लिए तैयार रहता है। ऐसा करके वह क्या अपने ऊपर, क्या कर्मचारी के ऊपर घोर अनर्थ करके महा हानि उठाता है। जिस कर्मचारी से श्रद्धा से भर कर वह कोई अध्यात्मिक कीमती मदद पा सकता था और अपना भला कर सकता था, उसकी सभाओं से प्राय: दूर दूर रह कर उल्टा कर्मचारी को उपदेश देकर तृप्ति पाता है। और अपने सच्चे भले से वंचित और बेहोश रहता है।

गुरू महाराज ने अपने सम्बन्ध में श्रद्धावर्धक साधनों के विषय में फरमाया है कि ऐसे साधक को बार बार ऐसे जनों के प्रति श्रद्धा और सम्मान महसूस करना चाहिए कि जिन्होंने भगवान के मिशन में सेवाकारी होने के लिए उस से अधिक त्याग किए हैं। और उच्च फल पैदा किए हैं, जो ऐसा नहीं कर सकता वह पूजनीय भगवान के सम्बन्ध में श्रद्धा का भाव नहीं पैदा कर सकता।

मनुष्य के घमण्ड के आधिपत्य की कहानी का यहां तक ही अन्त नहीं हो जाता। पापी, नीच, मिथ्यापरायण, संसारासक्त, मोहग्रस्त लोगों ने और तो और देवात्मा तक को भी नहीं छोड़ा और अपने घमण्ड की लपेट में उनको लेकर, उन पर और अपने ऊपर घोर अनर्थ किया है।

एक एक घमण्ड से पागल इन्सान ने देवात्मा को डाकुओं का सरदार कहा और बताया। एक एक स्त्री ने अपने पति को देव प्रभावों से उच्च परिवर्तन लाभ करते देखकर भगवान देवात्मा के आश्रम में जाकर स्यापा किया। भगवान देवात्मा को खूनी हत्यारा झूठा, कपटी, ठग, न जाने क्या क्या कुछ कहा गया। उन पर गोलियों से फायर किए गए। उनको अदालतों में घसीटा गया। उनके विरुद्ध हज़ारों ट्रेक्ट और पुस्तकें लिखी गईं। यह सब मनुष्य के घमण्ड की लीला थी। भगवान देवात्मा पर कैसा घोर अत्याचार! और अपने हित और शुभ पर कैसा घोर प्रहार!! भगवान देवात्मा को केवल उन लोगों ने ही नहीं सताया कि जिनको उनकी शरण में आने का अधिकार प्राप्त नहीं था, बल्कि उनको उन मनुष्य आत्माओं ने भी बेहद सताया और तड़पाया कि जिन्होंने उनके घर में जन्म लिया, जिन्होंने उनसे बड़े बड़े त्याग किए, परन्तु अपने अहं जात घमण्ड अनुराग के कारण उन्होंने अनेक बार अपने आप को बड़ा, ठीक और महान देखा और देवात्मा को छोटा गलत और तुच्छ देखा और विश्वास किया। और उनके साथ अनुचित व्यवहार

करके उनको बिना पानी मछली की तरह तड़पाया। घमण्ड अनुराग के कारण मनुष्य नेचर के सर्वोच्च आविर्भाव देवात्मा को भी नहीं पहचान पाया। न केवल पहचान नहीं पाया, बल्कि उन्हें उल्टे रूप में देख कर उन पर गहरे आघात लगाए।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के भजनों के यह पद "हमने तुम को नहीं पहचाना, हमने तुमको नहीं पहचाना" और सत्गुरू तुमरा मैं अपराधी, सत्गुरू तुमरा मैं अपराधी" पुकार पुकार कर मनुष्य के घमण्ड की लीला को प्रगट करता है।

घमण्ड और अनर्थ साथ साथ चलते हैं। ओह! घमण्ड का मनुष्य पर किस कदर अभिशाप! तब बड़े सौभाग्यवान है वह जन जो अपने महा घातक घमण्ड का सच्चा बोध पाते हैं और उसे घटाने के साधनों में प्रवृत होते हैं।

भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में मेरी आँखों देखी घटनाएं

एक बार का ज़िकर है कि मैं शाम के समय भगवान देवात्मा के बग़ीचे में सेवा का कुछ काम करने के लिए गया। वहां जाकर मैंने कई वृक्षों के नीचे के सूखे पत्ते इकट्ठे किए और उन्हें बग़ीचे से बाहर एक जगह खाद में डाल दिया। भगवान देवात्मा उस समय अपने देवालय के बरामदे में एक कुर्सी पर विराजमान थे। उन्होंने मुझे सूखे पत्ते ले जाते देख कर अपने श्री चरणों में बुलाया और मुझे इस प्रकार का हितकर उपदेश दिया –

यह सूखे पत्ते उठाने का काम कोई बड़ा काम नहीं है। इस समय तुम यदि लिखने, पढ़ने या किसी के साथ हितकर बातचीत करने वा अपने ज़िम्में का कोई और काम कर सकते तो वह इन पत्तों के उठाने की अपेक्षा बहुत मुफ़ीद और ज़्यादा कीमती काम हो सकता था। हां, यदि तुम अपनी शारीरिक और दिमागी अवस्था के विचार से अपने आप को इस समय ऐसा थका हुआ महसूस करते हो कि उपरोक्त प्रकार का अपेक्षाकृत कोई बढ़िया दर्जे का काम नहीं कर सकते और कुछ न कुछ हल्की शारीरिक सेवा करने की योग्यता रखते हो, तो फिर यही सूखे पत्ते उठाने का काम अच्छा है। मतलब यह है कि अपनी ज़िन्दगी के प्रत्येक समय को जहां तक हो सके अपने हित और अपनी ज़िम्मेवारियों का ख्याल कर के बेहतर से बेहतर तौर पर सुफल करना चाहिए और जैसे एक एक जन जो धन कमाने की इच्छा रखता हो, उसे अपने उस समय को कि जिसमें वह दस रुपए कमा सकता है, दो पैसे कमाने में खोना नहीं चाहता, वैसे ही कोई आत्महित अभिलाषी जन जिस समय अपने और दूसरों के हित की कोई ज़्यादा कीमती गति कर

सकता हो, उस समय में उसे बहुत थोड़ी कीमत की कोई गति करके घाटे में न रहना चाहिए।

भगवान देवात्मा के उपरोक्त प्रकार के महा हितकर उपदेश को सुनकर, जहां उपरोक्त विषय में मेरे सामने भगवान देवात्मा की महानता विशेष रूप से प्रगट हुई और मेरा हृदय गहरी श्रद्धा के भाव से उनके श्री चरणों में झुक गया वहां विविध सेवा के कामों के करने के विषय में मेरे सामने एक नई दुनियां खुल गई ओर उसमें प्रवेश करके मैं पहले से ज़्यादा बेहतर तौर से अपना आत्मिक भला करने के योग्य बन गया।

एक बार का ज़िकर है कि भगवान देवात्मा शाम के समय जब बहुत थकी हुई हालत में अपने बाग़ीचे में कुर्सी पर आराम कर रहे थे, तब मैं किसी ज़रूरी काम के लिए उनके श्री चरणों में हाज़िर हुआ। उन्होंने और बात चीत के सिलसिले में अपने देव स्वभाव के निम्नलिखित दो नियमों को भलीभांत मुझ पर प्रगट किया –

1. जब तक उनका शरीर और उनका दिमाग़ कुछ भी सेवा करने के योग्य हों, तब तक उनके द्वारा कोई न कोई सेवा का काम करते रहना वा उन्हें किसी सेवा के काम के योग्य बनाने का यत्न करते रहना।

2. अपने कार्यगत सारे समय को मुख्य और गौण विचार करके खर्च करना।

उपरोक्त दोनो उच्च नियमों की तशरीह करते हुए कृपा सागर भगवान देवात्मा ने फरमाया कि हम अपना प्रति दिन आम तौर से इस प्रकार व्यतीत करते है।

(1) प्रात: काल चार बजे शयन त्याग।

(2) प्राय: साढ़े पांच बजे तक अपने और दूसरों के भले के लिए शुभकामना का साधन अर्थात् नाना अधिकारी अस्तित्वों तक अपनी अद्वितीय देव ज्योति और अपने अद्वितीय देव तेज की किरणों को पहुंचाकर उनके सर्वोच्च कल्याण साधन में सहायक बनने का विशेष यत्न व संग्राम।

(3) ज़रूरियात से फ़ारग होकर, थोड़ा सा आहार।

(4) अपने शरीर को ज़्यादा और बेहतर दर्जे का सेवकारी बनाने के लिए सैर।

(5) सैर से वापिस आकर अपने अद्वितीय देवरूप और अपनी अद्वितीय धर्म शिक्षा आदि के विषय में कोई नया लेख लिखने वा पहले के किसी लेख को ठीक करने का काम।

(6) लिखने पढ़ने के काम के अयोग्य हो जाने पर कुछ देर भौतिक और उद्भिद जगत की सेवा करना।

(7) स्नान और भोजन

(8) नए सिरे से काम करने के योग्य बनाने के लिए थोड़ी देर आराम और तफ़रीह तबा के लिए थोड़ी देर कोई खेल।

(9) रोज़ाना अंग्रेजी अख़बार का अध्ययन।

(10) एक वा दूसरी हितकर पुस्तक का अध्ययन

(11) डाक में आए हुए पत्रों आदि को सुनना और समाज के सब विभागों के मंत्रियों आदि के साथ मिलकर सामाजिक ज़रूरी कामों को निपटाना वा किसी अन्य जन के भले के लिए उससे मिलना और उससे हितकर बातचीत करना।

(12) दिमाग़ी काम करने के अयोग्य होने पर भौतिक और उद्भिद् जगत की कोई सेवा का काम करना वा कराना।

(13) शाम का आहार।

(14) शारीरिक और लेख लिखने के कामों के योग्य न रहने और बहुत ज्यादा थक जाने पर कुर्सी पर बैठ कर आराम करना और एक वा दूसरे जन वा समाज के भले आदि के विषय में कोई विचार करना।

(15) जब उपरोक्त प्रकार की हितकर चिन्ता के करने के भी योग्य न रहना, तब फिर थकान को दूर करने का तफ़रीह तबा के लिए थोड़ी सी देर ताश खेलना।

(16) उपरोक्त विधि से सारा दिन निराली प्रकार के हितकर कार्य में व्यतीत करने के बाद जब शरीर और दिमाग कुछ भी सेवा के काबिल न रहे, तब नींद के लिए चारपाई पर लेटना और सोने के बाद फिर पहले की न्याईं ४ बजे शयन त्याग करना और उपरोक्त प्रकार के सब हितकर कार्यों में रत होना।

भगवान देवात्मा के सारे दिन की उपरोक्त प्रकार की निराली हितकर लीला मैंने वर्षों लगातार अपनी आँखों में देखी है और उसे देख देख कर मेरा हृदय जिन उच्च भावों से भर जाता रहा है, उसका मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता। भगवान देवात्मा इस दुनियां में रहते हुए एक तरफ़ प्रतिदिन जिस प्रकार के हितकर कार्यों में अपना जीवन व्यतीत करते रहे हैं, जहां उन कार्यों की महिमा असीम है, वहां वह प्रतिदिन जिस क़दर मिकदार में विविध प्रकार का हितकर काम निकालते रहे हैं, उसकी तुलना भी किसी और जन से कुछ भी नहीं हो सकती। इसके सिवाय भगवान देवात्मा की यह महिमा भी अद्वितीय है कि वह दिन भर के कामों में जहां मुख्य और गौण का पूरा ख्याल रखते थे, वहां अपनी ज़िन्दगी का कोई मिनट भी व्यर्थ नहीं खोते थे, अर्थात् अपना सारा समय केवल सत्य और हित के सर्वोच्च देव अनुरागों से परिचालित होकर उन्हीं की जय और उन्हीं की उन्नति के लिए खर्च करते थे, तब ऐसे परम पूजनीय भगवान देवात्मा के ऐसे निराले देव रूप की जितनी भी महिमा गाई जावे, कम है।

– श्रीमान धर्म बल जी।

नोट : आँखों देखी घटनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि हम सचमुच इन घटनाओं को घटित होते देख रहे हैं। अपनी कल्पना में यह देखें तो बहुत रस मिलता है।

माँ का पल्लू

गुरू जी ने बोला कि माँ के पल्लू पर निबन्ध लिखो, तो लिखने वाले छात्र ने क्या खूब लिखा :-

आदरणीय गुरू जी

माँ के पल्लू का सिद्धान्त, माँ की गरिमा-मयी छवि प्रभावित करने के लिए था। इसके साथ ही यह गर्म बर्तन को चूल्हा से उठाते वक्त, पकड़ने के काम आता था। पल्लू की बात ही निराली थी पल्लू पर तो बहुत कुछ लिखा जा सकता था। पल्लू, बच्चों का पसीना, आँसू पोंछने, गन्दे कान, मुंह की सफाई के लिए भी माँ इस्तेमाल कर लिया करती थी। खाना खाने के बाद, मुंह को पल्लू से साफ करने का अपना ही आनन्द होता था।

कभी आँख में दर्द होने पर, माँ अपने पल्लू को गोल बनाकर फूंक मारकर, गर्म करके, आँख पर लगा देती थी। दर्द उसी समय गायब हो जाता था। माँ की गोद में सोने वाले बच्चों के लिए, उसकी गोद गद्दा और उसका पल्लू, चादर का काम करता था। जब भी कोई अन्जान व्यक्ति घर में आता, तो बच्चा माँ के पल्लू की ओर देखता था, बच्चे ने जब हाथ में पल्लू थाम रखा होता, तो सारी कायनात, उसकी मुट्ठी में होती थी। जब मौसम ठण्डा होता था, माँ उसे चारों और लपेट कर ठण्ड से बचाने की कोशिश करती और जब बारिश होती, माँ अपने पल्लू में ढ़ाक लेती थी। ठण्ड से बचाने की कोशिश करती। पल्लू-एपरिन (Aprin) का काम भी करता था।

माँ इसको हाथ तौलिए के रूप में भी इस्तेमाल कर लेती थी। पल्लू का उपयोग पेड़ों से गिरने वाले मीठे जामुन और सुगन्धित फूलों को लाने के लिए किया जाता। पल्लू में, धान, दान, प्रसाद भी, संकलित किया जाता था। पल्लू घर में रखे समान से धूल हटाने में भी बहुत सहायक होता था। कभी कोई वस्तु खो जाए, तो एक दम से पल्लू गांठ लगाकर निश्चित हो जाना, कि जल्द मिल जाएगी। पल्लू में गांठ लगाकर माँ एक चलता फिरता बैंक या तिजोरी रखती थी, तो कभी कभी उस बैंक से कुछ पैसे भी मिल जाते थे। मुझे नहीं लगता कि विज्ञान पल्लू का विकल्प ढूंढ पाया है। माँ का पल्लू कुछ और नहीं, बल्कि एक जादुई एहसास है स्नेह वा सम्बन्ध रखने वाले अपनी माँ के इस प्यार और स्नेह को हमेशा महसूस करते हैं, जो कि आज की पीढ़ियों में नज़र आता है कि नहीं- पता नहीं।

नया वर्ष

वैसे तो नये वर्ष का एक महीना बीत चुका है, परन्तु सही मायने में प्रत्येक दिन ही नया होता है। परन्तु जब साल बदलता है, तो लोग उसे खुशी और उल्लास से मनाते हैं। पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुए हमारे भारतीय भी काफी मात्रा में 31 दिसम्बर की रात के 12 बजे तक खूब शराबें पीते हैं, नशे करते हैं, कई बार अश्लील हरकतें करते हैं, साथ ही नये वर्ष में तरह 2 के अच्छे संकल्प होते हैं, परन्तु संकल्प लेना और पूरा करना प्रत्येक सुख अनुरागी मनुष्य के लिए आसान ही नहीं बल्कि काफी हद तक असंभव है।

हम परम पूजनीय भगवान के सेवक होकर उपरोक्त प्रकार के जश्न तो नहीं मनाते, परन्तु कुछ संकल्प हम धर्म संगत में आकर वा विशेषकर गुरू महाराज के जन्म महोत्सव पर आकर लेते हैं, उन्हें ही पूरा करने में अपना सारा जोर लगा दें। यह बात याद रखने वाली है कि यदि हम अपने से किया हुआ संकल्प भी पूरा नहीं करते तो हमारा बल घटता जाता है, हमें आत्म सन्तुष्टि नहीं मिलती। आओ हम आने वाले वर्ष में अपनी शारीरिक मान्सिक वा सबसे बढ़कर हार्दिक उन्नति के लिए कुछ संकल्प लें।

1. सर्वप्रथम हम अपने शरीर को तो बहुत कीमती समझते हैं, उसके स्वास्थ्य रखने के लिए प्रतिज्ञा करें कि हम सैर और कुछ व्यायाम अवश्य करेंगे, खाने में जो हम अधिकता करते हैं, कोई मीठा अधिक खाना चाहता है, कोई तली हुई वस्तुओं का शौकीन है, अगर पूरा परहेज़ नहीं कर सकते, तो उसे हफ्ते में एक बार कर दें और उस पर पक्के रहें, इससे भी बहुत लाभ होगा।

मेरी पोती मैगी की बहुत शौकीन थी। मैंने उसको समझाया कि यह अच्छी चीज़ नहीं, इसलिए तुम हफ्ते में एक बार खा सकती हो, थोड़ी सी निराश हुई। यह भी शर्त रखी कि पहले एक कटोरी सब्जी खानी पड़ेगी। उसे मानना पड़ा और मैगी डे पर वह स्कूल से आकर गेट से भागती हुई आती। इस प्रकार माता-पिता को बच्चों को भी जाग्रित करने की आवश्यकता है। बचपन से ही आदतें बिगड़ती हैं। मुझे खुशी है कि अब वह अपने लिए भी और अपने परिवार के लिए भी स्वस्थ वर्द्धक खुराक पलैन करती है। बच्चों को कोक आदि सब चीजों से बचाएं।

2. मान्सिक रूप से विकसित होने के लिए भी कोई उम्र नहीं होती, थोड़ी सी उम्र बढ़ जाने पर आम लोग कहने लग जाते है कि यह सीखने की उम्र नहीं रही। सीखना निरन्तर उम्र भर का प्रयास है। इसलिए नई चीजें सीखने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अध्ययन की भी बहुत आवश्यकता है। नाना विषयों पर पढ़ते रहने से हमारा ज्ञान बढ़ता है। साल भर में हम कुछ नया सीखें, यह भी एक अच्छा संकल्प है। पढ़ने, लिखने में अपनी योग्यता बढाएं।

3. अध्यात्मिक तौर हम कहते रहते हैं कि

आत्मा मुख्य वस्तु है, परन्तु लगभग हम सबके लिए यह गौण ही है। मुख्य वस्तु को हम अधिक समय देते हैं, जैसे धन कमाने में हम उम्र लगा देते हैं और दुनियादारी के कामों में, फजूल बातचीत में, हम अपना समय व्यर्थ गवांते हैं। कई तो Phone ही इतने लम्बे करते हैं, कि समय बर्बाद हो जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम अच्छा साहित्य पढ़ें। गुरू महाराज की शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें पढें, उनसे जो लाभ हो वह लिखें और ठीक समझें तो श्रीमान जी को भेजें, यदि ऐसा लाभ पत्रिका में छपता है, तो दूसरों को भी लाभ हो सकता है।

4. नये वर्ष में हम संकल्प लें कि अपने घर को साफ रखेंगे, तरतीब भी सीखेंगे और घर में फूल ज़रूर लगाएंगे और पौधों की कुछ सेवा करेंगे।

5. जानवरों के लिए दाना वा पानी रखेंगे।

6. कोई न कोई सेवा का काम हर रोज़ ज़रूर करेंगे।

7. नये वर्ष में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि "हम नकरात्मक सोच को बदलें। अलोचना करने से बचें। ज़्यादातर अलोचनाएं दोष देने और मूल्यांकन करने से पैदा होती है। वह कहीं न कहीं, खुद को दूसरों से श्रेष्ट समझने का नतीजा होती हैं। इससे आपके दिमाग़ में नकारात्मिकता पैदा होती है। यदि आप दूसरों की आलोचना करेंगे, तो दूसरे भी आपकी आलोचना कर सकते हैं।" (दैनिक भास्कर)

इसका अर्थ है कि आखिर दूसरा अपनी defence में reaction करता है।

अलोचना करने से हमारे भीतर घृणा पैदा होती है और उसे अलोचना को अपने तक न रखकर दूसरों के पास भी हम घृणा का प्रकाश करते हैं, इससे स्वयं को अधिक दु:ख और हानि पहुँचती है। नये वर्ष में हम इससे बचने की कोशिश करें। यह बहुत कठिन है, क्योंकि जब मनुष्य के सुख पर चोट लगती है, तो हम कमज़ोर मनुष्यात्मा नकारात्मिक सोच में पड़ जाते हैं। मैंने स्वयं तजरबा किया है कि किसी के द्वारा अनुचित व्यवहार मिलने पर सोच का सारा तानाबाना उसके गिर्द ही घूमने लगता है, परन्तु गुरू महाराज की कृपा से यह मान्सिक रूप से समझ में आता है कि यह सोच घातक है। मैंने एक 2 सोच को बदलने के लिए कोशिश की है और हर रोज़ करती हूँ। परन्तु यह बहुत कठिन है कि अलोचना सहकर या बुरा सलूक पाकर हम दूसरे को अन्दर से क्षमा कर दें, परन्तु कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। हम आने वाले वर्ष में इस ओर अपनी कोशिश शुरु करें, गिरते पड़ते कुछ सफलता अवश्य मिलेगी और मन की शान्ति भी।

अपने संकल्प लिख कर रखें और यदि उनको प्रतिदिन दुहराते रहेंगे, तो पूरा करने में सहायता मिलेगी।

बाकी मैं अपने माननीय और प्यारे सेवक गण से यह प्रार्थना करती हूं कि वर्ष में यदि हरेक सेवक एक एक आदमी को गुरू महराज की शिक्षा से जोड़ता है, तो हमारा दायरा बढ़ता है।

जैसे महोत्सव पर श्रीमान सुखदेव जी ने बताया था कि मेरे भीतर सेवक बनकर इतना जोश था कि मैं जहां भी बैठता गुरू महराज की शिक्षा का बख़ान करता। यह सिलसिला चलता रहे तो कईयों का भला हो सकता है "आप बचो औरों को बचाओ" शब्दों को सार्थक कर सकते हैं। आप सब को पता है कि माननीय श्रीमान जी उस प्रकार आप लोगों के पास नहीं पहुँच सकते जैसे आ आकर कितने जनों को बचाया है, अब उनकी इस कमी को आप लोगों ने पूरा करना है। मेरी यह प्रार्थना सब सेवक गण से है।

हमारी बात कोई तभी सुनेगा, यदि हमारा आचरण गुरू महाराज की शिक्षा के अनुसार होगा। हमारे व्यवहार आम जनों से अलग दिखाई देंगे। यह हम सब के लिए ही आवश्यक है। लोग कहें कि देव समाज का सेवक होकर यह गल्त काम नहीं कर सकता। मेरी ऐसी कामना है कि आने वाले महोत्सव तक हम सब बेहतर बनकर आएं। तभी नया वर्ष मुबारक होगा।

– दिली शुभ कामनाओं के साथ
आपकी साथी सेविका
सुरजीत बराड़

हमारे माता पिता

कितनी ताक़त है इस एक शब्द में। दुनियां के सारे सृजन इसके सामने छोटे और कमज़ोर हैं। माता पिता अपने आप में मुकम्मल लफ़्ज़ है। एक कद्दावर शख़्सियत। आसमान उसके सामने छोटा है। माता पिता हर घर की धुरी हैं, जिस पर परिवार का ब्रह्मांड घूमता है। माँ का कहा कोई माने या न माने, क्योंकि अवमानना करने पर भी वह नाराज़ नहीं होती। उसे सन्तान दुखी भी करे, तो भी उसके मुंह से बद्दुआ नहीं निकल सकती। माँ की दुआ कभी खाली नहीं जाती, लोगों के बर्तन साफ करके भी मां 3 – 4 बच्चों को पाल लेती है, परन्तु 3 – 4 बच्चे मिलकर भी एक माँ को नही पाल सकते। परन्तु अकसर पिता बच्चों का रहनुमा है। सधारणत: बच्चों का स्वार्थ पूर्ण रवैया होता है। कहीं गरीबी के कारण बच्चे माता पिता के प्रति उदासीन होते हैं, कहीं पैसा आंखों में अन्धकार की पट्टी बांध देता है। परन्तु माता पिता का आंचल सदा बच्चों को दुखों से बचाने के लिए फैला रहता है।

मां जन्म से लेकर बच्चे के अस्तित्व को घड़ती है। वह प्यार, हिम्मत, शुभ आशीशों का अम्बार होती है। आपकी उन्नति पर उस जैसी खुशी किसी को अनुभव नहीं हो सकती और बच्चे के दुख से उससे बढ़कर कोई दुखी नहीं हो सकता। बच्चे के फिक़र, ना – कामयाबी उसके मुरझाए चेहरे से साफ झलकने लगती है तो उसकी तड़प उसकी रात की नींदें उड़ा देती है। बेटियों का स्थान मां के दिल में और भी कोमलता

भरा होता है। जब शादी के बाद भी बेटी घर आती है, तो पूरी रात भी गुज़र जाए, उसकी प्यार भरी बातें ख़त्म नहीं होती, रात ख़त्म हो जाती है।

आजकल माता – पिता सन्तान सम्बन्धी दिन गुजर चुके हैं परन्तु, प्रतिदिन ही माता पिता को याद करने का है। जो परम पूजनीय भगवान के आदेश इस सम्बन्ध को और भी मधुर – सम्मानिय और प्यार भरा बना सकते हैं। उनके धन्य भाग्य हैं, जिनके माता – पिता इस दुनियां में जीवित हैं। उनके गुणों को देखकर, उनके उपकारों को अनुभव करके और फिर उनके लिए तहदिल से सेवाकारी होकर अपने जीवन को सफल करना चाहिए। जिनके माता पिता दुर्भाग्य से इस दुनियां में नहीं हैं, उन्हें उनके गुणों वा उपकारों को सामने लाकर उनके आगे नतमस्तक प्रणाम करना वा उनके लिए दिल से शुभकामना करनी चाहिए। हमारे माता पिता ने बहुत दुख उठाकर हमें पाला पोसा, शिक्षा दी और खाने कमाने के योग्य बनाया है। एक एक माता पिता के कष्टों की लिस्ट इतनी लम्बी होती है कि यदि बच्चे दिल से उन्हें याद करने की कोशिश करें तो उनके आगे कोई गुस्ताख़ी करने का दुस्साहस ही नहीं कर सकते। बुढ़ापे में जब माता पिता असहाय हो जाते हैं, तब बच्चों के स्नेह, सम्मान वा समय की और भी ज़रूरत होती है, बेशक आज के व्यस्त जीवन में यह सरल नहीं है, परन्तु जो माता पिता ने हमारी असहाय अवस्था में हमारे लिए किया है, वह भी आसान नहीं था। उनका वह रात रात भर जागना, बिमारी में अपना खाना पीना, दुख दर्द भूल जाना, अपने खर्चों को कम करके बच्चों पर खर्च करना, उनकी खुशी के लिए अपनी पहुंच से बढ़कर खर्च करना और गिला न करना, हमें बार बार याद करना चाहिए। उनके लिए कुछ न कुछ भेंट करने वा उनके गले में फूलों का हार डालकर उन्हें सम्मानित करना चाहिए। इससे उनके दिल को ठण्डक मिलती है।

मां जहां बच्चे के लिए पहली पाठशाला है, तो पिता को बच्चे एक आदर्श रूप में देखते हैं। इसलिए जो पिता अपना आदर्श जीवन बच्चों के सामने रखते हैं, तो अकसर बच्चे उस पर गर्व करते हैं। मां तो प्यार की मूर्ति होती है, पिता को भी आदर्श पिता बनना होता है। आज भी हम देखते हैं कि अपने कन्धों पर बिठाकर पिता बच्चे को रामलीला दिखाने, दशहरा दिखाने आदि लेकर जाते हैं। ऊंगली पकड़कर घुमाने ले जाना बच्चे में सुरक्षा की भावना भरता है। छोटी – 2 बातों की शिक्षा देना, बैठना उठना सिखाना, खाना खाना सिखाना, इन्हीं बातों से बच्चा दिन पर दिन सुसभ्य बनता है। हमने देखा है कि बड़ी उमर में जाकर भी पिता की दी हुई सीख़ बच्चे याद करते हैं। पिता सख़्त वा अनुशासन प्रिय ज़रूर होते हैं पर मां का स्नेह बच्चे की जिन्दगी में समंजस्य बनाए रखता है। छोटी उमर में बच्चों को पिता सख़्त नज़र आते हैं, परन्तु सख़्ती से अच्छे नियमों के पालन से बड़े होकर उनकी ज़िन्दगी संवर जाती है। पिता बच्चे को जीवन

की कड़वी सचाईयों से रूबरू करवाते हैं, जो बच्चे की भविष्य की नींव को मजबूत करती है। पिता बच्चे का कैरीयर बनाने में सबसे बड़े गाईड होते हैं। वह बच्चे को स्वाभिमानी बनाते हैं, ईमानदार पिता बच्चे में कूटकूट कर ईमानदारी भर देते हैं। वास्तव में पिता बाहर से कठोर परन्तु अन्दर से कोमल होते हैं। इसी कारण बच्चों का भविष्य संवारने में उनका अधिक योगदान होता है।

ऐसे माता पिता को हम याद करें, अपने जीवन की उन घटनाओं को याद करें, जिनसे हमारा जीवन संवरा, उनकी कुर्बानियों को याद करें जिनके कारण आज हम सम्मानिय, सुख सुविधापूर्ण जीवन जीने के योग्य हुए हैं और उनके लिए कुछ प्रैक्टीकल करें, जिससे उनका हमें जीवन दान देना निरर्थक न जाए।

मैंने एक घटना पड़ी थी कि एक भारतीय पुरुष अपने कंधे पर बिठाकर अपने पिता को हज्ज पर लेकर गया। कंधे पर बिठाकर ही सारी औपचारिकताएं पूर्ण की।

लगभग 50 वर्ष के मुहम्मद रशीद ने कहा कि पिता को जाने के लिए वह व्हीलचेयर खरीद सकता था, लेकिन अपने कंधों से ज्यादा आरामदायक व्हीलचेयर कहीं नहीं मिली। रशीद इकलौता बेटा है, मां की मौत के बाद वही पिता की देखभाल करता है। वह कहता है कि जब वह छोटा था तो पिता उसे कन्धों पर बिठाकर घुमाते थे, अब उसका समय है, पिता हज्ज करना चाहते थे, उसके पास इतना पैसा नहीं था। जब वह 80 साल के हो गए और बेटे के हालत अच्छे हो गए, तो उन्होंने पिता के सपने को पूरा करने का फैसला किया, चाहे उस पर कितना ही खर्च हो जाए। उसने यह भी तय किया कि पिता को पांव ज़मीन पर नहीं रखने दूंगा। और उसने ऐसे ही किया। ऐसे सुन्दर जज़्बे को हमारा शत:शत प्रणाम। यह बच्चों के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है।

- सुरजीत बराड़

ज़रूरी सूचना

प्यारे धर्म सम्बन्धियों जैसे माता पिता दिवस 28-29-30 जनवरी 2022 को देव समाज मन्दिर मलेका (सिरसा) में मनाया गया, उसी प्रकार भाई भाग्नि यज्ञ संगरूर साधन मन्दिर में 18, 19, 20 फरवरी 2022 को मनाया जाएगा। आप सब की सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि न केवल स्वयं बल्कि अन्य अधिकारी आत्माओं को लेकर इस शुभ अवसर पर पहुंचें और पुण्य के भागी बनें। विशेषकर जिन धर्म सम्बन्धियों ने महा-उत्सव पर सत्संगों के आने का वायदा किया है, वह अपने वायदे पर अटल रहें। धन्यवाद।

आपकी सेवा में,
सैक्रटरी देव समाज (G)

बच्चे का सकून घर की शान्ति से जुड़ा है।

एक बच्चे का पूरा संसार उसके माता – पिता होते है। वह कैसा वयस्क बनेगा यह उसके माता – पिता के मानसिक, सामाजिक, शारीरिक, संवेदनात्मक क्रियाकलापों पर निर्भर करता है। अगर वे उसे संतुलित रिश्ते देते हैं तो वह ना सिर्फ परिवार से जुड़ा रहेगा बल्कि उसका लोगों पर भरोसा भी बना रहेगा, लेकिन माता – पिता की आपसी लड़ाई, असहमति उसकी पूरी दुनिया डगमगा देगी। ऐसा भी हो सकता है कि जो मानसिक दबाव में पूरी तरह से टूट जाए और कोई ग़लत कदम उठा ले।

माता – पिता आपस में किसी बात पर जब असहमति या नराज़गी जताते हैं, ताना देते हैं या गुस्सा होकर एक तरफ बैठ जाते हैं, और यह सोचते हैं कि ये उनके आपस की बात है। उनका बच्चा यह नहीं समझ पा रहा है, तो ऐसा बिल्कुल नहीं है। शोध के मुताबिक 3 महीने का बच्चा माता – पिता में अंतर समझने लगता है, 6 महीने का बच्चा माता – पिता के आपसी तालमेल को समझने लगता है और 9 से 12 महीने का बच्चा माता – पिता के मन की स्थिति को उनके स्पर्शमात्र से समझने लगता है।

'यदि मानसिक रूप से कमजोर या बीमार या असामाजिक व्यक्तियों का अध्ययन किया जाए, तो 90 फीसदी व्यक्तित्वों में इनका मुख्य कारण माता – पिता की आपसी बहस, मन मुटाव, अलगाव मुख्य रूप से देखने को मिलता है।'

कैसे पड़ता है बच्चों पर प्रभाव?

जब बच्चा माता – पिता को किसी बात पर सहमत नहीं होते हुए या नाराज़ होते हुए देखता है, तो कई बार वो रोने लगता है, बेचैन और असुरक्षित महसूस करता है। यहां तक कि वह सपने भी बेचैनी भरे देखता है और डर कर उठ जाता है। ऐसे बच्चों से एकाग्रता की कमी पाई जाती है, जो उनके सीखने की क्षमता को कमज़ोर बनाती है। उनके आत्मविश्वास में कमी आती है और उनमें झूठ बोलने की आदत भी पैदा होने लगती है। कई बार ऐसे बच्चे अधिक उम्र तक बिस्तर गीला करने की समस्या से ग्रसित होते हैं। तुतलाना, हकलाना याा शरीर का कोई एक हिस्सा उचका कर बात करना उनकी आदत में शामिल हो जाता है। ऐसे बच्चे में अनिंद्रा की समस्या होने लगती है और वह विद्रोही स्वभाव हो जाता है। वह तनाव, विकार और भय में जीने लगता है। उसे हमेशा माता – पिता को खोने का डर बना रहता है और अपने आप को हर बात के लिए दोषी मानने लगता है। हर किसी पर शक करना किसी पर भी विश्वास ना करना उसका स्वभाव बन जाता है। हर समस्या के समाधान पर आसान तरीके से नहीं पहुँच पाता। सिर्फ इतना ही नहीं, वो धीरे – धीरे माता – पिता के व्यवहार को अपनाने लगता है और वैसा ही व्यवहार करता है।

बच्चे माता – पिता द्वारा बोलने पर जितना

नहीं सीखते, उससे कहीं ज़्यादा देखकर सीखते है। ऐसे में माता – पिता की जिम्मेदारी बन जाती है कि बच्चे का पालन पोषण इस तरह करें कि वह मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक व सामाजिक रूप से सफल बन सकें।

अभिभावकों के लिए जरूरी है कि वे

★ **बच्चे के सामने झगड़ें नहीं**

जब बच्चा सामने हो, तो किसी भी विषय पर बहस न करें। अगर कोई मसला सुलझाना भी है, तो किसी बंद कमरे में सुलझाएं। अगर कई कोशिशों के बाद भी उनके सामने बहस कर बैठते हैं, तो उसी के सामने कोमलता से झगड़ा खत्म करने की कोशिश करें।

★ **एक – दूसरे का सम्मान करें**

बच्चों के सामने शब्दों का चयन बहुत सोच समझकर करें। शब्द किसी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को बना सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। अगर बच्चे के सामने एक – दूसरे की कमियां निकालकर हंसी – मज़ाक करते हैं, तो उन पर इसका असर हो सकता है। एक – दूसरे को ये बोल जाना कि 'तुमसे तो बात करना ही बेकार है' या 'तुमसे समय पर घर आने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।' एक ही कमी का बार – बार मज़ाक उड़ाना, ये आपके बीच के मनमुटाव हैं, जो बच्चा समझता है। आप उसके सामने एक – दूसरे से जैसे पेश आएंगे, बच्चा भी दोनों से वैसे ही पेश आएगा आपकी ही बातों को आप पर दोहराएगा।

★ **नाराज़गी बच्चे पर न उतारें**

एक – दूसरे की नाराज़गी और गुस्सा बच्चे के ऊपर नहीं निकालें। कई बार नाराज़गी के बीच बच्चा कुछ कहने की कोशिश करता भी है, तो अभिभावक नज़रअंदाज कर देते है। नाराज़गी कितनी भी हो, बच्चे पर बराबर नज़र रखें। और अगर असहमति या बहस शुरू भी हुई है, तो कोशिश करें कि उसका मुद्दा बच्चा न हो। इससे उसे लगेगा कि आपकी बहस का कारण वह है। अगर कोई फैसले पर दोनों की सहमति नहीं बन रही है, तो सहमत होने की कोशिश करें। खासतौर पर बच्चे के लिए एक – दूसरे से बहस न करें।

★ **परवरिश में असहमति न हो।**

बच्चा ग़लती करे, तो दोनों की राय उसके लिए एक – सी होनी चाहिए। एक अभिभावक कहे, 'चलो कोई बात नहीं' और दूसरा कहे कि 'तुम्हें माफी माँगनी चाहिए' तो ऐसे में बच्चा ग़लत व्यवहार करना सीख जाता है। अभिभावक से मिली छूट बच्चे के व्यक्तित्त्व को कमज़ोर और व्यवहार को ढुलमुल बना देती है।

★ **बहस का हिस्सा ना बनाएं**

कई मामलों में पिता या माँ बच्चे को अपनी तरफदारी करने के लिए दबाव डालते है। अगर बहस आपके बीच है, तो बच्चे को उसमें शामिल होने या किसी बात का गवाह बनाने की कोशिश ना करें। लालच देने का भी मतलब है कि आप उसे स्वार्थी बना रहे हैं।

(एक सेवक)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2022 ई०)

1	माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में	22 जनवरी, शनिवार (गणेश चौथ)
2	भाई बहनों के सम्बन्ध में	5 फरवरी, शनिवार (बसंत पंचमी)
3	देव समाज के सम्बन्ध में (देव समाज उत्सव)	25, 26, 27 फरवरी, शुक्रवार, शनिवार, रविवार
4	पति पत्नी के सम्बन्ध में	18 मार्च, शुक्रवार (होली)
5	उदभिद् जगत् के सम्बन्ध में	2 अप्रैल, शनिवार (नव सम्वत्)
6	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	17 अप्रैल, रविवार
7	स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में	14 मई, शनिवार (नृसिंह चतुर्दशी)
8	स्वदेश के सम्बन्ध में	10 जून, शुक्रवार (निर्जला एकादशी)
9	साथी सेवकों के सम्बन्ध में (सेवक उत्सव)	12, 13, 14 जुलाई, मंगल, बुध, वीर (व्यास पूजा)
10	सत्य धर्म बोध उत्सव (स्वास्तित्व के संबंध में)	10, 11, 12 अगस्त, बुध, वीर, शुक्र (रक्षा बंधन)
11	पशु जगत् के सम्बन्ध में	4 सितम्बर, रविवार(राधा अष्टमी)
12	परलोक के सम्बन्ध में	25 सितम्बर, रविवार (अंतिम श्राद्ध)
13	स्वजाति के सम्बन्ध में	4 अक्तूबर, मंगलवार (दशहरा)
14	भौतिक जगत् के सम्बन्ध में	24 अक्तूबर, सोमवार (दीपावली)
15	मनुष्य मात्र के सम्बनध में	8 नवम्बर, मंगलवार (गंगा स्नान)
16	भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	7, 8, 9, 10 दिसम्बर, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार

नोट :– 1) परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संबंध में आरम्भिक दिन 9 नवम्बर 2022 ई. दिन बुधवार है।
2) परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म दिन 09 दिसम्बर 2022 ई० दिन शुक्रवार है।
3) साधनों को जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए है, वह साधन विविध स्थानों जहाँ तक संभव हो उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्यौहार मनाया जाए।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक*
*"धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts